Result Mitra

रिजल्ट मित्र स्पेशल

Hand Written

करंट अफेयर्स नोट्स

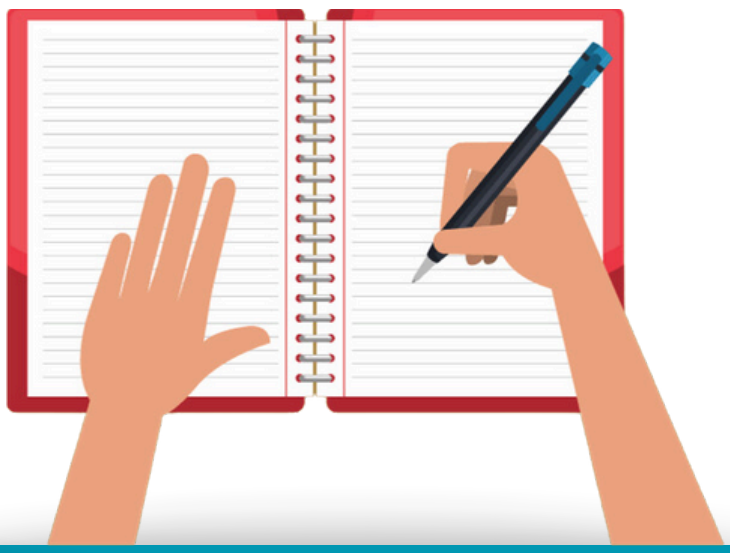

भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2023

चर्चा में क्यों ?

* हाल ही में पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री श्री भूपेन्द्र यादव ने वन अनुसंधान संस्थान देहरादून में भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2023 का विमोचन किया।

* वर्ष 1987 से भारतीय वन सर्वेक्षण द्वारा द्विवार्षिक आधार पर भारत वन स्थिति रिपोर्ट को प्रकाशित किया जा रहा है।

* भारत वन रिपोर्ट 2023 इस श्रृंखला की 18 वीं रिपोर्ट है।

* रिपोर्ट में शामिल जानकारी
  - वनावरण
  - वृक्ष आवरण
  - कच्छ वनस्पति आवरण
  - वनाग्नि की घटनाएँ
  - कृषि वानिकी

वर्तमान आकलन के अनुसार

* कुल वन और वृक्ष आवरण 8,27,357 वर्ग कि.मी. है जो देश के भौगोलिक क्षेत्र का 25.17 % है।

* वनावरण का क्षेत्रफल लगभग 7,15,343 वर्ग कि.मी. (21.76%) है।

* वृक्ष आवरण का क्षेत्रफल 112014 वर्ग कि.मी. (3.41%) है।

- वर्ष 2021 की तुलना में देश के कुल वन और वृक्ष आवरण में 1445 वर्ग किमी. की वृद्धि हुई।
- इसमें वनावरण में 156 वर्ग किमी. और वृक्ष आवरण में 1289 वर्ग.कि.मी. की वृद्धि शामिल है।

वन एवं वृक्ष आवरण में अधिकतम वृद्धि दर्शाने वाले शीर्ष चार राज्य

- छत्तीसगढ़ (684 वर्ग किमी.)
- उत्तरप्रदेश (559 वर्ग किमी.)
- ओड़िशा (559 वर्ग किमी.)
- राजस्थान (394 वर्ग किमी.)

वनावरण में अधिकतम वृद्धि दर्शाने वाले शीर्ष तीन राज्य:

- मिजोरम (242 km^2)
- गुजरात (180 km^2)
- ओड़िशा (152 वर्ग किमी)

क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे अधिक वन एवं वृक्ष आवरण वाले तीन राज्य है।

- मध्यप्रदेश (85724 वर्ग किमी.)
- अरुणाचल प्रदेश (67083 वर्ग किमी.)
- महाराष्ट्र (65383 वर्ग किमी.)

Result Mitra

कुल भौगोलिक क्षेत्रफल की तुलना में वन आवरण के प्रतिशत की दृष्टि से

- लक्षद्वीप (91.33 %)
- मिजोरम (85.34 %)
- अंडमान एवं निकोबार द्वीप (81.62 %)

* देश में बांस धारित क्षेत्र का विस्तार 154670 वर्ग किलोमीटर अनुमानित किया गया है।

* वर्ष 2021 में किये गए पिछले आंकलन की तुलना में बांस क्षेत्र में 5227 वर्ग किलोमीटर की वृद्धि हुई है।

* वनों में कुल कार्बन स्टॉक 7285.5 मिलियन टन अनुमानित किया गया है।

* पिछले आकलन की तुलना में देश के कार्बन स्टॉक में 81.5 मिलियन टन की वृद्धि हुई है।

* भारत का कार्बन स्टॉक 30.43 बिलियन टन CO_2 के समतुल्य तक पहुंच गया है।

* यह दर्शाता है कि वर्ष 2005 के आधार वर्ष की तुलना में भारत पहले ही 2.29 बिलियन टन अतिरिक्त कार्बन सिंक तक पहुंच गया है

* 2030 तक 2.5 से 3.0 बिलियन टन का लक्ष्य रखा गया है

Result Mitra

राष्ट्रीय वन नीति, 2018

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने जलवायु परिवर्तन, मानव-पशु संघर्ष और घटते हरित आवरण जैसे मुद्दों का समाधान करने के लिए राष्ट्रीय वन नीति 2018का मसौदा तैयार किया है। यह नीति वनों के संरक्षण, संवर्धन और सतत प्रबंधन के लिए नई दिशा प्रदान करती है। इसकी मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

1. खराब वनों का सुधार: सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) के माध्यम से क्षतिग्रस्त और खराब हो चुके वनों में फिर से हरियाली लाने के उपाय।
2. शहरी हरियाली: शहरी क्षेत्रों में हरियाली को बढ़ावा देना।
3. आग से सुरक्षा: वनों को आग से बचाने के लिए आधुनिक तकनीक का उपयोग।
4. सहभागी वन प्रबंधन: राष्ट्रीय सामुदायिक वन प्रबंधन (NCFM) मिशन की शुरुआत, जिसमें स्थानीय समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी।
5. नदियों का पुनरोद्धार: नदियों के जलग्रहण क्षेत्रों में वनीकरण के माध्यम से नदियों का संरक्षण।
6. वनों का आर्थिक मूल्यांकन: वनों की आर्थिक क्षमता का मूल्यांकन, जलवायु अनुकूल और बाजार केंद्रित दृष्टिकोण अपनाना।
7. वन उत्पादों का प्रमाणन: वन उपज को प्रमाणित कर उनके मूल्य में वृद्धि करना।
8. जलवायु परिवर्तन: वन प्रबंधन में जलवायु परिवर्तन से संबंधित चिंताओं को शामिल करना और REDD+ (वन कटाई और वन क्षरण से उत्सर्जन कम करने की रणनीति) का उपयोग।
9. कृषि वानिकी: कृषि और फार्म वानिकी को बढ़ावा देना।
10. उत्तर-पूर्वी वनों पर ध्यान:उत्तर-पूर्व के क्षेत्रों के वनों की सुरक्षा और संवर्धन।
11. जैव विविधता संरक्षण: आधुनिक तकनीकों और बेहतर दस्तावेजीकरण के माध्यम से जैव विविधता का संरक्षण।

12 सूचना प्रणाली: एक राष्ट्रीय वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन सूचना प्रणाली की स्थापना।
13 अनुसंधान और शिक्षा: वनों से संबंधित अनुसंधान और शिक्षा को बढ़ावा देना।
14 राष्ट्रीय वन बोर्ड: केंद्र में एक राष्ट्रीय वन बोर्ड और राज्य स्तर पर राज्य वन बोर्डों का गठन।

केंद्र में इसका नेतृत्व वन मंत्री करेंगे और राज्य स्तर पर इसका नेतृत्व राज्य के वन मंत्री करेंगे। इनका उद्देश्य अंतर-क्षेत्रीय समन्वय, प्रक्रियाओं को सरल बनाना, और समय-समय पर नीतियों की समीक्षा करना है।
यह नीति वनों के सतत प्रबंधन और संरक्षण को बढ़ावा देते हुए जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता के संरक्षण के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।